LEARNING

Discrimination (विभेदन)

Date 16 / 04 / 2020

विभेदन (Discrimination) के अर्थ एवं स्वरूप :

विभेदन सामान्यीकरण (generalization) का विपरीत होता है। अनुबन्धन के क्षेत्र में किये गये अध्ययनों में यह देखा गया कि प्रशिक्षण के आरंभिक अवस्था में प्राणी CS तथा उससे मिलते-जुलते उद्दीपनों में अन्तर नहीं कर पाता है। फलतः वह CS के समान ही इन सभी उद्दीपनों (CS_1, CS_2 --- CS_9) के प्रति अनुक्रिया करता है जिसे सामान्यीकरण (Generalization) कहा जाता है। जैसे-जैसे प्रशिक्षण आगे बढ़ता है प्राणी में CS को अन्य समान उद्दीपनों से भिन्न करने की क्षमता विकसित हो जाती है। और अब वह सिर्फ CS के प्रति अनुक्रिया करता है अन्य सामान उद्दीपनों (CS_1, CS_2 --- CS_9) के प्रति नहीं। इसे ही मनोवैज्ञानिकों ने विभेदन (discrimination) की संज्ञा दी है। इस अवस्था में प्राणी CS तथा उन उद्दीपनों (CS_1, CS_2 — CS_9) के बीच विभेदन करना सीख लेता है। स्पष्ट है कि विभेदन के स्वरूप के बारे में हमें निम्नांकित तथ्य मुख्य रूप से मिलता है।

I. विभेदन की प्रक्रिया सामान्यीकरण की प्रक्रिया के विपरीत होती है।

II. विभेदन में प्राणी CS के प्रति ही अनुक्रिया करता है अन्य किसी भी समान उद्दीपन के प्रति नहीं।

III. विभेदन की अवस्था में CS की विशिष्टता की पहचान स्पष्ट हो जाती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विभेदन (discrimination) सामान्यीकरण (generalization) की प्रक्रिया के विपरीत होती है।

Page No.

Scanned with CamScanner

Date ___/___/___

क्लासिकी अनुकूलन की तरह प्रवर्तन या साधनात्मक अनुकूलन में भी उद्दीपन-विभेद देखा जाता है। साधनात्मक अनुकूलन में उद्दीपन-विभेद का अर्थ है कि जब प्राणी एक परिस्थिति में कोई व्यवहार करना सीख लेता है तो उस परिस्थिति से अधिक भिन्न परिस्थिति में वह उस प्रतिक्रिया को नहीं दुहराता है। Skinner के अध्ययन में देखा गया कि एक परिस्थिति में कबूतर ने चोंच मार कर प्रबलक प्राप्त करना सीखा। दूसरी परिस्थिति में फिर उसी समस्या को प्रस्तुत किया गया, लेकिन परिस्थिति में भिन्नता कर दी गई। देखा गया कि कबूतर ने उचित स्थान पर चोंच मारने का व्यवहार नहीं किया। गाइख एव साल्ज 1950 के अध्ययन से भी इस बात का प्रमाण मिलता है।

Nishikant Jaiswal
Assistant Professor
Dept of Psychology
Dr. L.K.V.D college Tajpur
Samastipur

Scanned with CamScanner